30 शिक्षामित्र में कला के साथ विकास

सुदेषणा सिन्हा

शिक्षामित्र 2005 में प्रारम्भ हुआ और तभी से उसके चारों ओर कला भी फलने–फूलने लगी। शिक्षामित्र एक वैकल्पिक स्कूल/शिक्षा का केन्द्र था जिसे झुग्गी समुदाय के 8–16 वर्ष के बच्चों के लिए खोला गया था। यह 2005 अप्रैल से 2011 जनवरी तक अस्तित्व में रहा और इस दौरान यहाँ अधिगम प्रक्रिया, कक्षा की कालावधि, विषय–सामग्री तथा मूल्यांकन के रूपों एवं तरीकों सम्बन्धी प्रयोग किए गए।

यहाँ अन्य विषयों के अलावा ड्रॉइंग, पेन्टिंग, विविध क्राफ्ट, कला के शो और फिल्में देखना, संगीत सुनना और उसे रचने की कोशिश करना, थियेटर और नृत्य आदि किसी न किसी रूप में रोज होते रहते थे। स्कूल में सीखने का कुल समय छह घण्टे का था; जिसमें से इन कलात्मक गतिविधियों को, अँग्रेजी और गणित की तरह ही, रोज डेढ़ से दो घण्टों तक करवाया जाता था।

कला और उससे जुड़ी हुई हर बात हमारे लिए जीने का तरीका तब बन गई जब उसने बच्चों और शिक्षकों के जीवन में अपनी जड़ें जमा लीं। कला महज एक 'कक्षा' या 'पाठ्येतर गतिविधि' नहीं थी, यह तो हर तरफ बिखरी हुई थी – दीवारों पर, दरवाजों पर, नोटबुक्स पर, कागज पर, कपड़ों पर, यहाँ तक कि इसने हमारी अधिकांश परीक्षाओं में भी जगह बना ली। ड्रॉइंग, गायन और थियेटर न केवल अँग्रेजी और कला की कक्षाओं के अंग बन गए वरन वे भूगोल और गणित की कक्षाओं का भी हिस्सा थे।

इस प्रकार से जो कला उभरी वह सिर्फ कागज पर रंगीन पेनों से बनाई जाने वाली कला नहीं थी। इसमें कपड़े और मिट्टी का भी बहुत प्रयोग होता था। पेंटब्रश, गोंद और कैंची हमेशा उपलब्ध रहते थे ताकि बच्चे आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग कर सकें। हमने सोच–समझकर चीजों का पुन: प्रयोग करने की आदत को बढ़ावा दिया। रंगों के अलावा कोई और सामग्री विरले ही खरीदी जाती। ड्रॉइंग, पेन्टिंग, मॉडल, सिलाई के प्रॉजेक्ट आदि के लिए काम में लाए हुए कागज, ठोंगे (समाचार पत्रों से बने लिफाफे), कागज के अनुपयोगी डिब्बे, पुराने कपड़े आदि का पुन: इस्तेमाल किया जाता था। स्कूल की देखा–देखी शिक्षकों ने भी पुराने

पिकासो की Guernica से प्रेरित समूह कोलाज

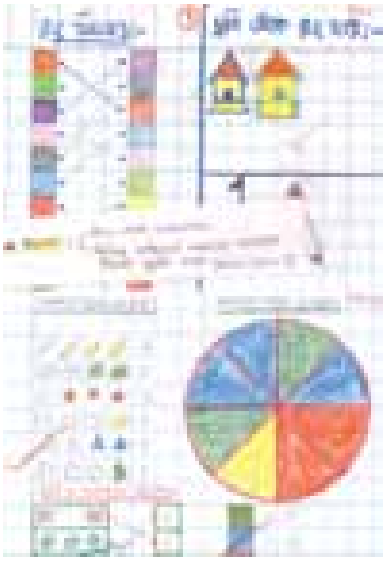

"ड्रॉइंग, मिट्टी का काम, सिलाई, थियेटर, गायन, नृत्य आदि पढ़ाई के लिए आवश्यक हैं क्योंकि कई लोगों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता और वे पढ़ना नहीं जानते।"–अनीता

बीके द्वारा पेंट किया हुआ दरवाजा

बधाई कार्डों, कपड़ों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और रंगों की मदद से अपने खुद के काड्र्स, रैपिंग पेपर, थैले और लिफाफे बनाने शुरू कर दिए। घर में रोजमर्रा की चीजों को रंग और एक 'कलात्मक रूप' मिलने लगा। सौन्दर्य लोगों के जीवन को छूने लगा था एवं री–सायकिलिंग कई लोगों के लिए एक स्वाभाविक बात बन गई।

कला शिक्षक

शिक्षामित्र की पहली कला शिक्षिका ने मौलिकता की भावना, री–सायकिलिंग और काम के बाद सफाई करने की आदत के बीज बोए। अत्रेयी कहानियों, कला और क्राफ्ट के माध्यम से गुजरते हुए बच्चों को ड्रॉइंग के बुनियादी कौशल भी सिखाती थीं। वे हर एक की व्यक्तिगत शैली को प्रोत्साहित करतीं, यह बात मन में बैठातीं कि कला में 'सही' और 'गलत' नहीं होता। वे बच्चों से कहतीं कि वे कागज की एक शीट के परे जाकर भी ड्रॉइंग करें। अगर बच्चे को अपनी सोची हुई बात को चित्र रूप में आगे बढ़ाने के लिए अधिक कागज की जरूरत पड़ती तो बस उसे एक कागज और जोड़ने को कहतीं। उनका काम कठिन था – क्योंकि बच्चों को किताबों से नकल करने की आदत थी और वे उन्हें अपने मन से चित्र बनाने को कहती थीं। रंगों को साझा करना, अपनी ड्रॉइंग को दो रंगों तक सीमित रखना या बचे हुए रंगों के मिश्रण से पेन्टिंग करना – इन सब बातों ने बच्चों को चुनौती तो दी ही, साथ ही उपलब्ध संसाधनों का भली प्रकार उपयोग करना भी सिखाया।

लेकिन अत्रेयी ने साल भर के अन्दर ही काम छोड़ दिया। शिक्षामित्र के शुरू होने के कुछ समय बाद ही मौरा वहाँ काम करने लगीं। वे हफ्ते में एक बार आतीं और बच्चों को अँग्रेजी बोलना सिखातीं। वे बहुत जोशोखरोश के साथ पढ़ातीं और अपने शिक्षण में अनेक गतिविधियों, गानों, रंगों, किताबों, छोटी–छोटी मूर्तियों और चित्रों का उपयोग करतीं। लेकिन फिर भी शिक्षामित्र के पहले वर्ष में यह देखा गया कि बच्चों में एक किस्म की दादागिरी, तोड़–फोड़ की प्रवृत्ति, अवज्ञा और कक्षा में आराम से बैठकर काम करने को लेकर एक बेचैनी–सी है। हर बार मौरा यह सोचकर

शिक्षामित्र में आयोजित एक प्रदर्शनी के लिए निमंत्रण कार्ड को री–सायकिल की गई सामग्रियों और मौलिक कला से बनाया गया था।

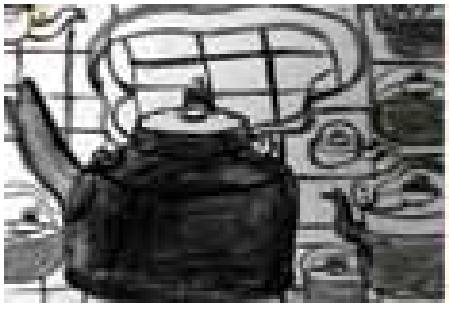

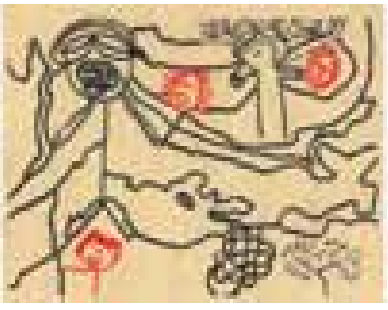

बचे हुए रंग से केतली की पेन्टिंग; दो रंगों से पेन्टिंग और हर व्यक्तिगत शैली को प्रोत्साहन; ढेर सारे नृत्य और गीतों से अँग्रेजी सीखना।

घर लौटतीं कि वे अगले हफ्ते शिक्षामित्र नहीं आएँगीं, पर वे हर बार इस बावले से स्कूल में लौट आतीं। अकसर ऐसा होता कि बच्चे बोलने की तुलना में हँसते ज्यादा थे और मौरा की कक्षा को मौज–मस्ती करने का स्थान मानते। हालाँकि उन्होंने थोड़ी बहुत अँग्रेजी सीखी, लेकिन वे उसका ज्यादा उपयोग नहीं करते थे। लेकिन जब मौरा रंग भरने या किसी मजेदार वर्कशीट का काम करवातीं तो अनायास ही बच्चे टुकड़ों में अँग्रेजी बोलने लगते।

क्या इसमें कोई सन्देश छुपा था?

अत्रेयी के काम छोड़ने के एक साल बाद मौरा ने कला शिक्षिका का काम सम्भाला। तकनीकी तौर पर देखा जाए तो वे कला शिक्षिका नहीं थीं। पर वे एक सृजनशील शिक्षिका थीं जो बच्चों की प्रतिक्रियाओं, डूडल्स(लक्ष्यहीन चित्रकारी), लेखन, भावनाओं, क्राफ्ट और कला के प्रति संवेदनशील थीं। उन्होंने अपनी कला की कक्षाओं पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित किया और उसमें भी उसी जीवंतता, गतिशीलता, मस्ती, रंग और किताबों का उपयोग किया–अपने को जैसे उसमें पूरी तरह से डुबो दिया। उनका फोकस कला पर था, जिसका मतलब था कि हर बच्चे के भीतर छुपे कलाकार को खोजना और उसे भी इस बात का भान कराना।

पिछले साल जो बात हमारी समझ में नहीं आई थी वह मानो अचानक स्पष्ट हो गई। बच्चे कला की कक्षा में ध्यान देने लगे (हालाँकि इसमें दो साल लग गए) और वे पहली बार मौरा की बात को ठीक से सुनने लगे। जितना ही अधिक वे सुनते उतना ही अधिक बोलने भी लगे।

उन्हें रंग या सहायता माँगने के लिए या फिर अपने विचार व्यक्त करने के लिए बोलना ही पड़ता था। अब कला की कक्षा में अँग्रेजी ज्यादा चलती थी। जल्द ही मौरा की बोलचाल की अँग्रेजी की कक्षा अपना अर्थ खो बैठी और उसे बन्द कर दिया गया।

मौरा की कला कक्षाओं ने अपने में जीवन को समाविष्ट किया। इन पाठों ने बच्चों को स्वयं से, अपने चारों ओर की दुनिया से तथा भाषाओं से जोड़ा (अँग्रेजी और बांग्ला)। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने कक्षा की सीमाएँ पार कर लीं। इन कक्षाओं का विस्तार हुआ और वे कला दीर्घाओं (के.जी. सुब्रह्मण्यम व समकालीन कलाकारों या मध्य प्रदेश की गोण्ड कला की प्रदर्शनियों), सड़कों, पार्कों,

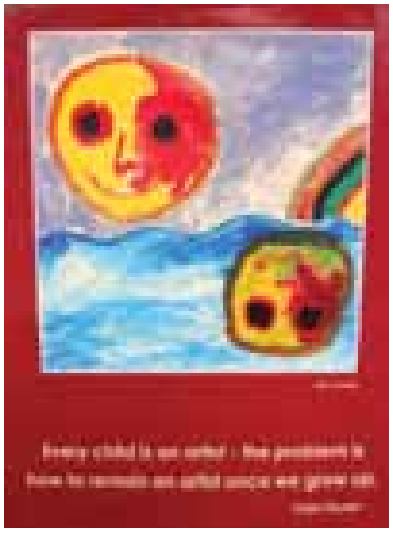

शिक्षामित्र द्वारा डिजाइन किया गया पोस्टर

शिक्षामित्र के उत्पादों की बिक्री

1.सड़क पर स्केच बनाना 2. के.जी. सुब्रह्मण्यम की प्रदर्शनी में अवलोकन और नोट्स लेना 3. मौरा के बगीचे में पेंसिल स्केचिंग एवं वाटर कलर

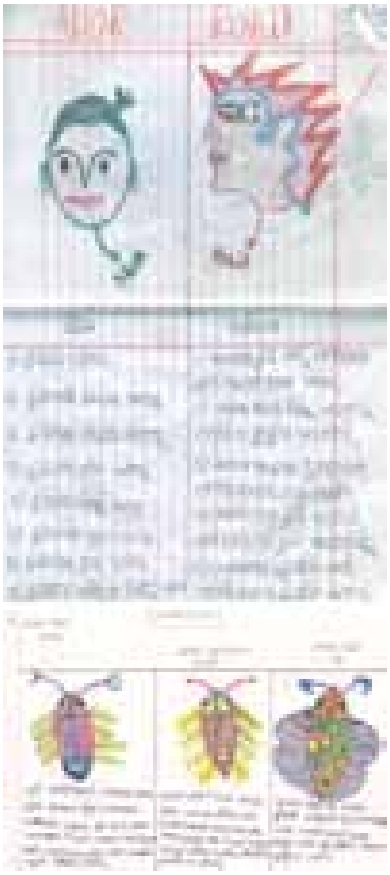

विद्यार्थियोंकी हेयर–स्टायल की तुलना ई.वी.एस.: तिलचट्टे का रूपान्तरण

हर कृति अनुपम कला है

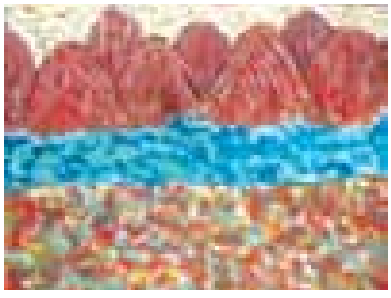

वैन गॉग शैली में रोहित की कोशिश

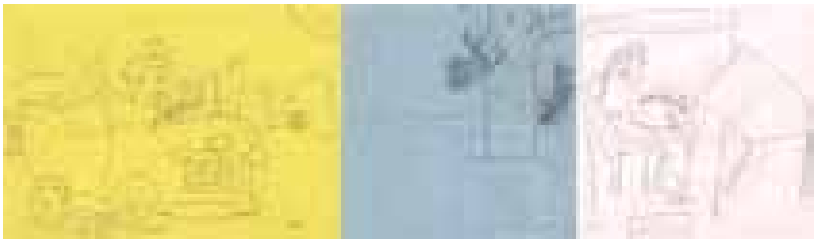

राज की ड्रॉइंग शृंखला

स्थानीय कुम्हार की भट्ठी और मौरा के बगीचे तक जा पहुँचीं। ये कक्षाएँ कला की कक्षा से बढ़कर थीं – विद्यार्थियों को कला मीडिया के सम्भावित क्षेत्रों से अवगत कराया गया जैसे कि तैल पेस्टल, विविध प्रकार के रंग, कागज, 'मिली हुई' वस्तुएँ (जैसे पंख, रैपर, डाक टिकट आदि), ब्रश, मिट्टी, सुई और धागा, बेकिंग (सेंकना), संगीत तथा और भी बहुत कुछ। उन्होंने कई कलाकारों और कारीगरों को भी आमंत्रित किया। इन कक्षाओं में री–सायकिलिंग, संरक्षण, सहजीवन और कला व जीवन के जुड़ाव के मूल सिद्धान्तों पर भी चर्चा की जाती थी।

शिक्षामित्र में दो महीने के लिए कपड़े पर थीम–शिक्षण का सत्र चलाया और इसी से निकला सीखो और कमाओ प्रॉजेक्ट। हमने ऐसे उत्पादों को खोजने का प्रयास किया जिससे हमारे विद्यार्थियों की विशिष्टता प्रदर्शित हो। ये उत्पाद थे–थैले, डायरी के कवर, बुकमार्क्स, कोस्टर्स, गहने आदि। कला और सिलाई के मिश्रण से बिक्री योग्य वस्तुओं को डिजाइन किया गया, बनाया गया और उत्कृष्टता की हद तक परिष्कृत किया गया। गुणवत्ता नियंत्रण पर भी ध्यान दिया गया। बच्चों ने इन उत्पादों का दाम तय करना, पैक करना, प्रदर्शित करना, बेचना और वितरित करना तो सीखा ही, साथ ही जो पैसा शिक्षामित्र या उसके बाहर आयोजित प्रदर्शनियों में सामान बेचकर मिला था, उसका हिसाब रखना भी सीखा। इतना ही नहीं वे अपने विद्यार्थी–खाते में पैसे बचा भी रहे थे।

खुद की शैली खोजें–नकल न करें

शिक्षामित्र ने उपर्युक्त शब्दों पर अपनी नींव रखने की कोशिश की। हर बच्चे को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे अपनी खुद की शैली का पता लगाएँ, फिर चाहे वह भाषा हो, पर्यावरण अध्ययन हो या फिर कला हो। कोई वैन गॉग या पिकासो, किसी लेखक की शैली, एक रोचक वर्कशीट या शिक्षक के कहानी सुनाने के तरीके से प्रेरित हो सकता है। इससे बच्चे चीजों को अलग दृष्टि से देखना और सोचना सीख पाएँगे, और फिर अपने मौलिक विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित होंगे।

राज नस्कर पहले अपनी इच्छा से स्कूल नहीं जाता था। उसने कहा कि वह शिक्षामित्र में नवीनता को खोजने और 'कुछ सीखने' आया है। राज को चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता था पर वह किताबों के चित्र, कैलेण्डरों या विज्ञापनों की नकल करता था। उससे कितना ही आग्रह करो, समझाओ या मिन्नतें करो, वह मानता ही नहीं था। एक दिन दोपहर के समय राज मेरे पास एक चित्र लेकर आया जिसे उसने अँग्रेजी प्राइमर से नकल करके बनाया था। "यह तो बहुत अच्छा है," मैंने कहा। "तुम नकल ही करना चाहते हो तो बाहर जो पेड़ है उसकी नकल क्यों नहीं करते?" यह सुनते ही वह बैठकर चित्र बनाने लगा। खिड़की से जितना पेड़ नजर आ रहा था, उतने का उसने चित्र बना दिया। "मैं इससे ज्यादा नहीं देख पा रहा," उसने कहा,"अगर मैं बाहर देखूँ तो पेड़ में और भी काफी कुछ है। लेकिन मैं उतने का ही चित्र बनाऊँगा जितना खिड़की की इस फ्रेम से दिखाई दे रहा है," राज ने घोषित किया। मैंने हामी में सिर हिलाया। कुछ देर बाद जब मैं मेज पर काम कर रही थी तो मैंने देखा कि वह दरवाजे पर बैठा मेरा प्रोफाइल बना रहा था। उस दिन उसने अपनी चित्रकारी में 'नकल' के द्वारा मौलिकता का समावेश किया। वह वास्तविक जीवन की नकल कर रहा था। तबसे उसने अपनी ही चित्रकारी करने की कोशिश की, नकल करना कम से कमतर होता गया।

राज ही की तरह एस.के.सम्राट ने भी नकल करना बन्द नहीं किया। वह पाँच वर्ष की उम्र में अनाथ हो गया था और निर्देशों का विरोध करता था। जब कला शिक्षक इस बात पर जोर देते कि उसे अपने बूते पर चित्रकारी करनी है तो वह वैसा करने की बजाए अपनी 'नकल की हुई चित्रकारी' को फाड़ देना पसन्द करता। कला शिक्षक जोर देते रहे, अपना आपा खोते रहे। इसके बाद मौरा अपने साथ नई ऊर्जा लेकर आईं और कला में एक नया जीवन फूँका। बच्चे रंग, धागे और सलमा–सितारों का प्रयोग करके अपने खुद के डिजाइन बनाने लगे थे। सम्राट भी अपनी खुद की चित्रकारी के चारों और कढ़ाई करने के काम में व्यस्त हो गया। सिर्फ इस कढ़ाई की खातिर उसने एक मौलिक चित्र बनाया था। और फिर उसकी नकल करने की इच्छा भी खत्म हो गई। उसमें अपनी चित्रकारिता और कढ़ाई के डिजाइन बनाने तथा भित्ति–चित्र बनाने का नया जुनून पैदा हुआ, यहाँ तक कि उसने अपनी ही कहानी को चित्रित करना शुरू कर दिया।

हमने ध्यान दिया कि हर बच्चे में एक ही चीज को बार–बार चित्रित करने की प्रवृत्ति थी जो एक पेशेवर कलाकार की रचनाओं से भिन्न नहीं थी। हमने अनेक बच्चों को पुराने ए–फोर शीट्स कागजों को जोड़कर एक छोटी–सी ड्रॉइंग पुस्तिका बनाने को प्रोत्साहित किया ताकि उन कागजों का पिछला हिस्सा भी काम आ सके। चैताली ने फूल बनाए, मोहन ने रंग–बिरंगे चेहरे बनाए, रोहित ने बिल्ली बनाई, बाबई ने पहाड़ बनाए, और अडोर ने घुमावदार 'लहरों' के डिजाइन बनाए....उन्होंने बार–बार लगातार नए रंगों में नए डिजाइन बनाए।

एस.के सम्राट की कढ़ाई वाली पेन्टिंग

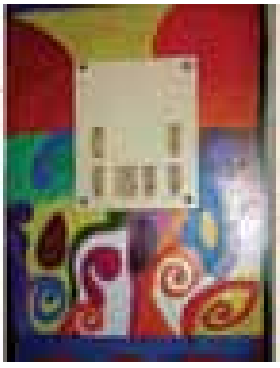

गन्दे स्विचबोर्ड को सुन्दर बनाना

दीवार पर शुरुआत

कलादीर्घा: कक्षा से घर की दीवारों तक

एक बार गर्मियों की छुट्टियों से पहले हमने सोचा कि स्कूल की थोड़ी सी सफाई की जाए। तो हमने गलियारे की साथ वाली दीवारों के कुछ हिस्सों को विभाजित किया (पेंसिल से लाइनें खींचकर) और बच्चों से कहा कि वे चित्र बनाने के लिए जमीन पर बैठें। अब तक बच्चे तरह–तरह के पेंट और ब्रशों का उपयोग सहजता से करने लगे थे। उन्हें हमेशा अपने दिल से पेंट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था –लेकिन मन में कुछ योजना बनाने के बाद –और उनकी कला में कभी भी पेंसिल, पैमाने या रबड़ का प्रयोग नहीं किया जाता था।

एक बड़ा खब्ती विचार मेरे मन में आया। मैंने मौरा और विद्यार्थियों से कहा कि वे मेरे घर आएँ। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या वे मेरे घर की दीवारों को पेंट करना चाहेंगे? लेकिन क्यों? क्या यह जोखिम उठाने वाली बात नहीं होगी? लेकिन मेरे पास कारणों की अपनी एक सूची थी जो इस प्रकार थी–

- दीवारें सुन्दर और कुछ अलग–सी लगेंगी।
- फ्रेम किए हुए चित्रों को लटकाने की बजाए, बच्चों के बनाए हुए भित्तिचित्र अधिक बेहतर लगेंगे।
- स्विचबोर्ड के चारों ओर का स्थान गन्दा हो जाता है। अत: उनके चारों पेंट करने से गन्दगी छुप जाएगी और आगे होने वाली गन्दगी को रोका जा सकेगा।
- बच्चों के लिए यह काम इस बात का भी परीक्षण होगा कि वे दूसरे की दीवार को उसकी इच्छा के अनुसार (अपनी इच्छानुसार नहीं) कैसे पेंट करते हैं। यह किसी ऑर्डर को पूरा करने जैसा होगा।
- कला की कक्षा स्कूल में न लगकर किसी के घर पर लगेगी और यह एक अच्छा परिवर्तन होगा।
- बच्चों को काम के बदले वस्तुएँ दी जाएँगी। जैसे कि सबके लिए गरमागरम खाना और रंग खरीदने के लिए चन्दा।

आत्मविश्वास से मुस्कुराते हुए और पेंटब्रशों से लैस बच्चे मेरे घर पर उमड़ पड़े। मैंने उन्हें समझाया कि मैं क्या चाहती हूँ और वे दीवारें दिखाईं जिन पर मैं काम करवाना चाहती थी।

मौरा ने खाने के कमरे की दीवार पर पेंसिल से आयत बनाए। ऐसे 12 आयतों में नौ विद्यार्थी काम करने वाले थे। तीन विद्यार्थी अनुपस्थित थे लेकिन उनकी जगहें सुरक्षित रखी गईं क्योंकि वे बाद में आने वाले थे। बच्चे एक कतार में हाथों में रंगपट्टिका लिए खड़े थे और अपने लिए नियत दीवार के हिस्से को घूर रहे थे। पेंसिल का प्रयोग किए बिना वे सीधे ही अपने–अपने हिस्सों पर पेन्टिंग करने में जुट गए।

टेढ़ी–मेढ़ी भूरी रेखाओं से उभरता हुआ चित्तीदार बाघ

युवा कलाकारों द्वारा चित्रित लगभग पूरी रंगीन दीवार

खड़कपुर प्लेटफॉर्म पर एक आश्रय–स्थल के बच्चों द्वारा बनाया हुआ भित्तिचित्र

बीच–बीच में मौरा और मैं एक–दूसरे को चिंतित नजरों से देखते रहते। मेरे घर के अन्य सदस्य खराब परिणामों के डर से काँप उठते थे।

उन्हें क्या पता था उनके सामने कैसा सुन्दर आश्चर्य प्रकट होने वाला है। इस बीच, लड़कियों ने जोड़े बनाकर स्विचबोर्ड के चारों ओर पेंट करना शुरू कर दिया था। जब उनका काम समाप्त होने लगा तो उन्होंने यहाँ–वहाँ रंग छिड़के और एक बॉर्डर बनाया ताकि वह उभरकर दिखे। मेरे शयन कक्ष की दीवार पर पाँच बच्चों की एक टीम ने कब्जा कर रखा था तथा दो और कलाकारों ने स्विचबोर्ड सजाया। सजहन एक ऐसा छात्र था जो शिक्षामित्र से विशेष रूप से जुड़ा हुआ था, एक सहज नायक था और अपनी विशिष्ट उपस्थिति से अलग ही दिखता था। वह वहाँ खड़ा–खड़ा बस देखता रहा। जल्द ही उसने दीवार का एक प्रमुख हिस्सा चुना (जहाँ मेरे हिसाब से चित्र नहीं बनाने थे) और उस साफ, सफेद दीवार पर भूरे रंग पोतने लगा। आसपास खड़े दर्शक सकते में आ गए। धीरे–धीरे दीवार पर दलदली पृष्ठभूमि से निकलते हुए एक बाघ का चित्र उभरा (दिलचस्प बात यह थी कि यह लड़का सुन्दरबन का रहने वाला था)।

खड़कपुर प्लेटफॉर्म पर एक आश्रय–स्थल के बच्चों द्वारा बनाए हुए दो भित्तिचित्र; कला कक्षाओं ने विद्यार्थियों को सामग्री साझा करने के लिए सदा प्रोत्साहित किया

पेन्टिंग का यह दौर करीब तीन घण्टे तक चला, जिसका समापन एक सादे भोजन और ढेर सारे नाचने–गाने के साथ हुआ। दीवारों को देखते हुए आपस में स्वाभाविक बातचीत और आलोचना भी हुई। बच्चे अपने ही काम का आकलन कर रहे थे। अन्त में, कुछ चौकस विद्यार्थियों ने गौर किया कि कुछ हिस्से रंगों के बहुत ज्यादा मिश्रण या गन्दे रंगों आदि की वजह से काफी गहरे हो गए थे। जो बच्चे ऐसी कमियों को ठीक करना जानते थे उनसे हमने कहा कि वे कुछ हिस्सों को परिष्कृत कर दें, स्विच के आसपास की लाइनों को उसी रंग से सीधा कर दें; जिस हिस्से पर एक बच्चे ने ज्यादा गहरा रंग लगा दिया था क्योंकि वह रंगों को भली प्रकार मिला नहीं पाया था–वहाँ हमने एक चमकीला रंग लगाने को कहा और यहाँ–वहाँ लगे कुछेक धब्बों को साफ करने को कहा। इसके बाद सबने कमरे साफ किए, हाथ–मुँह धोए और कला की सामग्री को समेटा।

इस प्रक्रिया से कौन–सी बात उभरी?

हमें यह पता लगा कि हमारे पास आत्मविश्वासी युवा कलाकारों का ऐसा समूह था जो लोगों की दीवारों को पेंट कर सकता था। उनके मन में कल्पनाएँ थीं जिन्हें वे पेंसिल से चित्र बनाए बिना सीधे पेन्टिंग के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकते थे। हमने यह भी महसूस किया कि कुछ बच्चों को एक समूह में रखने से भविष्य में बेहतर परिणाम मिल सकेंगे। वे अपनी एक टीम बनाकर 'दीवारों का ऑर्डर' ले सकते थे और उसे शुरू से आखिर तक बड़ी खूबसूरती से पूरा कर सकते थे।

काफी समय बाद, ये एक टीम में–मौरा के साथ या उसके बिना भी–अन्य स्कूलों और संस्थाओं में जाते और वहाँ के विद्यार्थियों और शिक्षकों को दीवारें पेंट करना सिखाते। पश्चिम बंगाल के ग्रामीण इलाकों के काफी सरकारी स्कूलों का बाहरी भाग अब सुन्दर व रंगबिरंगा हो गया है जिसे शिक्षकों और विद्यार्थियों ने सजाया है। रेलवे प्लेटफॉर्म के बच्चों के आश्रय–स्थलों के सुन्दर भीतरी भाग बच्चों द्वारा ही बनाए गए हैं जिसकी प्रेरणा उन्हें शिक्षामित्र के बच्चों से मिली।

जिम्मेदारी के साथ कला

पेन्टिंग और ड्रॉइंग का मतलब एक जगह बैठकर रंगों का प्रयोग करना मात्र नहीं है, जैसा कि अकसर कहा जाता है कि 'बैठो और चित्र बनाओ'। इसका अर्थ रंगों को बर्बाद न करना और उनकी बचत करना भी है। पेन्टिंग और ड्रॉइंग का मतलब इसमें काम आने वाली सामग्री की देखभाल करना है—रंग, ब्रश, गोंद, कागज, कैंची और कपड़े —इन सबकी देखभाल करने की जरूरत है और उन्हें अपना खुद का एक स्थान भी चाहिए होता है। जैसे हम घर लौटना चाहते हैं वैसे ही ये भी अपने—अपने स्थानों को लौटना चाहते हैं। इसलिए हम कला की कक्षा में सही आकार वाले डिब्बों की री—सायकिलिंग करते हैं जिनमें कला के लिए आवश्यक विभिन्न सामग्रियों को उनके आकार के लिए उपयुक्त डिब्बों में रखा जा सके। इससे हमें बाद में उन्हें ढूँढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। हम आसानी से उन्हें आपस में साझा कर सकते हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने शिक्षकों की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती कि वे आकर हमें ये चीजें दें। हम अपनी मदद खुद कर सकते हैं।

मैंने रोहित नामक एक छात्र से पूछा कि हम अपने स्कूल में अलग तरह से काम कैसे करते हैं तो उसने ये बातें बताईं —

- हम ड्रॉइंग पुस्तिका में चित्र बनाया करते थे पर अब हम उपयोग किए हुए कागज के पीछे चित्र बनाते हैं।
- जो कागज दोनों तरफ से इस्तेमाल हो जाता है उससे लिफाफे बनाए जाते हैं जिनका उपयोग स्कूल के कामों के लिए किया जाता है।
- हम अपनी किताबों पर अखबार का पुट्ठा चढ़ाते हैं और फिर उसे सजाते हैं।
- पेन्टिंग खत्म करने के बाद हम सारे बचे हुए रंगों को मिलाकर नए रंग बनाते हैं ताकि उनके साथ नए प्रयोग कर सकें।
- हम कागज की कतरन, बोतल, कॉर्क, प्लास्टिक के पैकेट, बटन, लकड़ी, पेंसिल की छीलन आदि सभी को बचाकर रखते हैं। बाद में इन सबका उपयोग किसी न किसी काम में अवश्य होता है ।
- हम एक पुराने कागज के डिब्बे को सजाकर उसमें अपना सामान रखते हैं।
- हम अपने फूलों के गमलों में इस्तेमाल की हुई चाय की पत्तियाँ डालते हैं।
- हम सरस्वती पूजा के लिए रद्दी चीजों से सजावट का सामान बनाते हैं।
- हम प्लास्टिक का प्रयोग कम से कम करते हैं —हालाँकि हम ऐसा हमेशा ठीक से नहीं कर पाते।

कला शेल्फ

एक बार हम अपने संसाधन कक्ष को पुनर्व्यवस्थित कर रहे थे ताकि उसमें कुछ चीजें और रखी जा सकें। इस प्रक्रिया में दीवार में लगी एक शेल्फ को वहाँ से हटाना पड़ा। हम इस शेल्फ को उस मुख्य कमरे में ले गए जहाँ ज्यादातर बच्चों की कला की कक्षा लगती थी। हमने बच्चों को बाहर भेजकर उनसे ऐसे छोटे—छोटे डिब्बे ढूँढ़कर लाने को कहा जो इस शेल्फ में पजल की तरह फिट हो जाएँ। फिर उनमें कला में काम आने वाली सामग्री (कैंची, धागे, टेप, रंगीन पेंसिलें, स्केच पेन, एक तरफा पुन: प्रयोग में लाने वाले कागज, अखबार, पेंटब्रश, रबड़, ड्रॉइंग की पेंसिलें, सिलाई का सामान आदि) रख सकें, जिससे सभी लोग उन चीजों को आसानी ले सकें। हम बच्चों से लगातार यह कहते कि वे इन चीजों का उपयोग करने के बाद उन्हें वापस उन्हीं डिब्बों में रख दें ताकि अन्य लोग भी उन्हीं चीजों का इस्तेमाल कर सकें। सफाई के लिए हम सारे डिब्बे एक कतार में रखते, इधर—उधर बिखरी हुई चीजों को उनमें डालते और फिर इन डिब्बों को वापस शेल्फ में जमा देते।

हाँ, हर बार यह तरीका कारगर नहीं होता था और बच्चे चीजों को गलत स्थानों पर रख देते। नतीजा यह कि कभी कैंची नहीं मिलती तो कभी सारा का सारा गोंद खत्म हो गया होता, या.....लेकिन बच्चे यह बात सीख रहे थे कि अगर चीजों का ध्यान रखा जाए और उन्हें यथास्थान रखा जाए तो उन्हें और अधिक दक्षता के साथ साझा किया जा सकता है।

कला के समान ही सफाई भी महत्त्वपूर्ण है

हर कक्षा के बाद मौरा अखबार बिछा देतीं और बच्चे अपने ब्रश और पानी के पात्र अच्छी तरह से धोकर वापस लाते और उन्हें सूखने के लिए एक निश्चित प्रकार से रख देते। हमने लड़कियों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे अपनी सहज प्रवृत्ति के चलते सफाई में लड़कों की मदद न करें। हर एक को अपना स्थान खुद ही साफ करना था जिसके बाद चारों ओर नजर दौड़ाते हुए दूसरे कामों में भी मदद करनी थी जैसे झाड़ू लगाना, जमीन से रंग को रगड़कर निकालना आदि। हर पेंटब्रश को इस तरह से रखना था कि उनके सिरे एक ही ओर रहें और जब ये सूख जाते तो शिक्षक अगली कक्षा के लिए उन्हें उनके सिरे को ऊपर की ओर करके रख देते। बच्चों ने इसे जरा कठिनाई से सीखा और कई ब्रश खराब भी हो गए क्योंकि वे उनका गीला हिस्सा नीचे रख देते थे। पानी के पात्रों को अखबार पर औंधा रख दिया जाता और सूखने पर उन्हें डिब्बों मे रखा जाता ताकि डिब्बे गीले न हों। अब शिक्षामित्र के सभी विद्यार्थी इसी तरीके का उपयोग करते हैं और हम देखते हैं कि सजहन सामुदायिक पुस्तकालय प्रॉजेक्ट में छोटे–छोटे विद्यार्थियों को यही सब सिखा रहा है।

तो हमने क्या सीखा?

मूल रूप से देखें तो हम कला के बारे में जो कुछ कह और कर रहे थे वह काफी हद तक कला विशेषज्ञों और शिक्षणशास्त्रियों के अनुरूप था। बच्चों ने इन विशेषज्ञों को नहीं पढ़ा था और न ही कला की कक्षा शुरू करने के पहले हमने सचेतन रूप से उनका अध्ययन किया।

लेकिन जब छात्रों से कला के बारे में विचार पूछे गए तो डॉली ने लिखा –

"मेरा ऐसा मानना है कि बड़ों की तुलना में बच्चों को चित्र बनाना ज्यादा अच्छा लगता है। जब बच्चे शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते तो वे सब कुछ चित्र बनाकर कह देते हैं। चित्रकारी का मतलब है रंग। हर मनुष्य, पशु और पक्षी में रंग है। हम रंगों के माध्यम से कुछ भी कह सकते हैं, पर बड़े इस बात को नहीं मानते। जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो दूसरों की बात मानकर वही करने लगता है जो वे करते हैं और इसलिए वह चित्रकारी न करने का निर्णय लेता है। और इस प्रकार अपनी पहचान खो बैठता है।"

देवी प्रसाद की पुस्तक 'शिक्षा का आधार– कला' में हर्बर्ट रीड का कहना है –

"इसलिए एक बच्चे की कला उसकी आजादी, उसके गुणों व प्रतिभाओं की सफलता एवं वयस्क जीवन में उसके असली और स्थायी खुशी का पासपोर्ट है। कला बच्चे को खुद से बाहर निकाल लाती है। यह कागज के टुकड़े पर अपनी ही धुन में डूबे बच्चे की अस्पष्ट आड़ी–तिरछी आकृतियों के रूप में एक अकेली व्यक्तिगत गतिविधि के रूप में शुरू हो सकती है। पर बच्चा इन अस्पष्ट आड़ी–तिरछी आकृतियों को बनाता ही इसलिए है कि वह अपने आन्तरिक जगत की बातें किसी सहानुभूति रखने वाले दर्शक, अपने माता–पिता को बता सके जिनसे वह सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया की उम्मीद रखता है।"

ज्यों–ज्यों हमने बच्चों को बड़ा होते देखा त्यों–त्यों शिक्षामित्र में कला भी विकसित होती गई। बाहर के कई लोग यह सोचते थे कि यह कला का स्कूल है; वास्तव में यह ऐसा स्कूल था जहाँ हम सबने कला और उसकी अभिव्यक्ति को मूल रूप में सीखा। कला की कक्षा के लिए हम लगभग हमेशा ही एक अस्पष्ट से विचार के साथ काम शुरू करते पर शीघ्र ही कक्षा का मूड या उस दिन का मिजाज उसे एक खास रंग दे देता। किसी सुबह भाषा की

एक कक्षा शिक्षामित्र के पूरे दिन को प्रभावित कर सकती थी। दिलचस्प अवलोकनों से हमें नए–नए विचार मिलते और हममें इतना लचीलापन था कि हम तुरन्त ही उन पर अमल करने लगते। हम बच्चों को अपनी कहानियाँ, व्यक्तिगत इतिहास की पुस्तिकाएँ या गणित की शीट और पुस्तक समीक्षा आदि की सचित्र व्याख्या करने देते थे क्योंकि यह बात स्पष्ट थी कि कला उन्हें खुद को पहचानने और अपने सहज रूप में बने रहने में मदद देती थी।

कई कारणों से 2011 में स्कूल को बन्द करना पड़ा जिनमें आर्थिक प्रबन्धन प्रमुख था। लेकिन कला की जो भावना शिक्षामित्र में विकसित हुई वह विभिन्न स्कूलों, केन्द्रों, शिक्षकों और प्रशिक्षकों में फैल चुकी है।

हमारे विद्यार्थियों और हमारे द्वारा प्रस्तावित किए जाने वाले कई आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षामित्र की भावना जाहिरा तौर पर जारी है।

A photo album of Shikshmitra's art classes can be seen at:
http://www.flickr.com/photos/tik-tiki/sets/72157601353116588/

सुदेषणा सिन्हा *पिछले 17 वर्षों से अभिनव वैकल्पिक शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही हैं। 2005 से सुदेषणा शिक्षामित्र की संस्थापिका–सदस्या एवं समन्वयक रही हैं जो एक वैकल्पिक स्कूल रहा है तथा 9–16 वर्ष के पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए काम करता है। वर्तमान में शिक्षामित्र एक अभिनव अधिगम व संसाधन एवं प्रशिक्षण केन्द्र है जिसका नेतृत्व सुदेषणा करती हैं। मुम्बई विश्वविद्यालय से एक विशेष शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित सुदेषणा ने कई सालों तक विशेष तथा औपचारिक स्कूलों में विशेष शिक्षक के रूप में काम किया है। केन्द्रीय कोलकाता में प्रवासी झोपड़पट्टी और सड़क पर रहने वाले बच्चों के लिए 'आशीर्वाद' नामक एक हिन्दी माध्यम वाला अभिनव स्कूल खोलने और चलाने में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने ऐसे अनेक संगठनों में शिक्षक एवं सलाहकार के रूप में काम किया है जो उन बच्चों व वयस्कों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर काम करते हैं जिन तक पहुँचना मुश्किल होता है। उनकी विशेष रुचि भाषा, बच्चों, शिक्षकों व माता–पिता की रचनात्मकता और प्रेरणा में है। उनसे shikshamitra.kolkata@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *नलिनी रावल*